Ans —

निर्देशन का अर्थ — निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जो आदिकाल से लेकर अब तक के विकासक्रम से विचार करे तो यह ज्ञात होगा कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था एवं समाज की संरचना अधिक जटिल हो चुकी है। पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में, प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में समस्याग्रस्त दिखाई देता है। जन्म के पश्चात से ही व्यक्ति जैसे-जैसे समाज के सम्पर्क में आता है, वह स्वयं को अनेक समस्याओं से घिरा हुआ पाता है। घर में, समाज में, विद्यालय में अथवा अपने दिनचर्या से सम्बन्धित कार्यों में उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिये, उसे किसी-न-किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता होती है। निर्देशन का उपयोग इसी उद्देश्य के पूर्ति में सहायक है।

निर्देशन के आधार पर ही व्यक्ति को अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों तथा व्यक्तिगत से सम्बन्धित विशेषताओं का ज्ञान हो जाता है। तथा वह स्वयं में निहित विशेषताओं का समुचित उपयोग करने में सक्षम हो जाता है। निर्देशन के आशय की दृष्टि से यह विशेष उल्लेखनीय है कि निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करना नहीं है। वरन् इसके आधार पर किसी व्यक्ति को इस योग्य बनाया जाता है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान करने में स्वयं ही सक्षम हो सके।

Phone/Email/Notes
Notes
JANUARY
FEBRUARY MARCH APRIL MAY JUNE
Scanned with CamScanner

निर्देशन व्यक्ति के अपने लिये एवं समाज लिये अधिकतम लाभदायक दिशा में उसकी सम्भावित, अधिकतम क्षमता के विकास सहायक तथा निरन्तर चलनेवाली प्रक्रिया है।

निर्देशन की विशेषताएँ (Charactersities of Guida

* निर्देशन जीवन में आगे बढ़ने में सहायक होती है। वि की भाँति निर्देशन भी विकास की प्रक्रिया है।
* निर्देशन द्वारा व्यक्ति अपने निर्णय स्वयं ले सकने में सक्षम बनाता है तथा अपना भार स्वयं वहन करने में सहायता करता है।
* इसके अन्तर्गत एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को उसकी समस्याओं एवं समायोजन विकल्पों के चयन में सहायता प्रदान करती है।
* निर्देशन में छात्रों की वैयक्तिक आवश्यकताओं के अनुरूप अनुदेशन को समायोजित करने में सहायता प्रदान करती है।
* निर्देशन व्यक्ति को विकसित करने, अपने सम्बन्ध में पर्याप्त समन्वित जानकारी कराने तथा व्यावसायिक जीवन में अपनी भूमिका को समझने में सहायता प्रदान करता है।
* निर्देशन व्यक्ति की जन्मजात योग्यताओं व शक्तियों तथा प्रशिक्षण से अनेक कौशलों को अधिकतम विकसित करने का मूल प्रयास है।
* निर्देशन, शिक्षा प्रक्रिया की वह अवस्था है, जिसमें छात्र को उसकी योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुरूप उपयुक्त पाठ्यक्रमों के चयन में तथा रोजगार के चयन में सहायता प्रदान करता है।

nal/Notes

DECEMBER

M		5	12	19	26
T		6	13	20	27
W		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
F	2	9	16	23	30
S	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	

Scanned with CamScanner

निर्देशन की प्रकृति (Nature of Guidance)

निर्देशन एक ऐसी महत्वपूर्ण प्रक्रिया है और मानवीय जीवन में एक विशिष्ट सेवा के रूप में अपना योगदान होती है, इस प्रक्रिया के अन्तर्गत एक अधिक योग्य, निपुण अथवा सक्षम व्यक्ति अपने से कम योग्य, अकुशल अथवा अक्षम व्यक्ति को सहायता प्रदान करता है। सुझावों के रूप में वैचारिक स्तर पर प्रदान की जानेवाली यह सहायता किसी भी क्षेत्र में प्रदान की जाती है। निर्देशन की यह विशेषता है कि इस प्रक्रिया के अन्तर्गत, व्यक्ति पर कुछ थोपने के स्थान पर उसके स्वाभाविक विकास को ही महत्व प्रदान किया जाता है तथा व्यक्ति के विकास पथ पर अग्रसित करने में सहायता प्रदान करना ही इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है। इस प्रकार सुझावरूप सहायता के आधार पर व्यक्ति की सफलता की सम्भावनाओं में वृद्धि करना तथा व्यक्ति स्वयं समाज का कल्याण करने हेतु निर्देशन सेवाओं का अत्यधिक महत्व है।

दार्शनिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक तीनों प्रकार से निर्देशन का महत्व होता है। इन तीनों क्षेत्रों से सम्बन्धित आधारों अथवा सिद्धान्तों का ध्यान रखकर ही इस प्रक्रिया का संचालन किया जाता है।

* निर्देशन का स्वरूप बहुपक्षीय होता है।
* निर्देशन का सम्बन्ध व्यक्ति के समग्र पक्षों के विकास से होता है।

* इस प्रक्रिया का तत्कालिक उद्देश्य, व्यक्ति की तत्कालिक समस्याओं के समाधान में सहायता करना है।

शैक्षिक क्षेत्र के समान ही व्यावसायिक क्षेत्र में भी निर्देशन की भूमिका का विशेष महत्व है, इस क्षेत्र में यह प्रक्रिया अनेक दृष्टिकोण से सहायक है।
उदाहरणार्थ

1) योग्यतानुकूल व्यवसाय का चयन करने
2) व्यावसायिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों से परिचित कराने के लिए
3) व्यावसायिक अवसरों में विविधता की दृष्टि से
4) श्रम एवं उद्योग की परिस्थितियों में वांछित परिवर्तन करने के लिए
5) विशिष्टीकरण की दिशा में प्रेरित करने हेतु तथा
6) नव-विकसित तकनीकी से परिचित कराने के लिए आदि।

इसी प्रकार वैयक्तिक समस्याओं के समाधान हेतु भी निर्देशन का व्यापक उपयोग किया जाता है।
1) संकटकालीन स्थिति के निरन्तर सामाजिक एवं संवेगात्मक सन्तुलन बनाये रखने में
2) व्यक्तिगत समस्या का समाधान करने हेतु वांछित निर्णय शक्ति का विकास करने में
3) व्यक्ति समायोजन की दृष्टि से,
4) पारिवारिक जीवन में समायोजन की दृष्टि से,
5) अवकाश के समय का सदुपयोग करने के लिए इत्यादि।

समाज की आवश्यकताओं, परिस्थितियों एवं तात्कालिक समस्याओं का अध्ययन तथा व्यक्ति के विकास की प्रक्रिया को समझाने के उपरान्त ही यह सम्भव हो सकता है कि कोई व्यक्ति निर्देशन प्रदान करने की प्रक्रिया में कौशल प्राप्त कर सके। इसे निर्देशन की विधि एवं व्यक्ति की जानकारी प्रदान करने वाले परीक्षणों के प्रशासन व आकलन का समुचित ज्ञान है।

Principles of Guidance

1) निर्देशन आत्म-बोध और आत्म-विश्वास को विकसित करता है।

2) निर्देशन जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

3) निर्देशन छात्र, अभिभावक, अध्यापक, प्रशासक और परामर्शदाता का सहकारी कार्य होना चाहिए।

4) निर्देशन को सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का एक अंग समझना चाहिए।

5) निर्देशन को सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।

6) निर्देशन कार्यक्रम में अधिकांश व्यक्तियों को सामान्य व्यक्ति मानना चाहिए।

7) निर्देशन समस्त छात्रों के लिए होना चाहिए।

8) निर्देशन छात्र विकास के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित होना चाहिए।

9) यह विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन की क्षमता का विकास करने में सहायक है।

10) निर्देशन के आधार पर व्यक्ति एवं समाज दोनों की ही प्रगति एवं विकास हेतु प्रया

Phone/Email/Notes

Notes

Scanned with CamScanner

निर्देशन का क्षेत्र (Scope of Guidance)

व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक क्षेत्र मे किसी न किसी प्रकार की समस्या का होना स्वाभाविक है। इन समस्याओं का समाधान किये बिना प्रगति-पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते रहना नितान्त असम्भव है। कोई भी व्यक्ति जिस क्षण इन समस्याओं का समाधान करने की दिशा मे हतोत्साहित हो जाता है, उसी क्षण इन समस्याओं का समाधान करने की दिशा मे हतोत्साहित हो जाता है, उसी क्षण उसकी प्रगति अवरुद्ध हो जाती है। समस्या समाधान कितना अधिक महत्वपूर्ण है, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति मे इस क्षमता का विकास करने मे सर्वाधिक सहायक है।

शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र मे निर्देशन प्रक्रिया का उपयोग अनेक प्रकार किया जाता है।

1) वांछित पाठ्यक्रम पर आधारित विषयों का चयन करने मे।
2) पाठ्य सहगामी क्रियाओं के चयन हेतु
3) नवीन पाठ्यक्रम के सम्बन्ध मे निर्णय लेने मे
4) अधिगम-प्रक्रिया के निरन्तर अपेक्षित उपलब्धि स्तर बनाये रखने की दृष्टि से
5) राष्ट्रीय एकता पर आधारित कार्यक्रमों मे भाग लेने हेतु प्रेरित करने की दृष्टि से
6) अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या का समाधान करने के लिये
7) प्रौढ़ शिक्षा पर आधारित कार्यक्रमों की दिशा मे प्रेरित करने हेतु आदि।
8) पारिवारिक जीवन मे समायोजन की दृष्टि से।

JANUARY
Phone/Email/Notes
Notes
Scanned with CamScanner

निर्देशन एवं शिक्षा, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इनके अनुसार जिस प्रकार शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है, उसी प्रकार निर्देशन को भी एक व्यापक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के माध्यम से बालकों के विभिन्न पक्षों के विकास हेतु उसी प्रकार सहायता प्रदान की जाती है। इस प्रकार निर्देशन एक व्यापक प्रक्रिया है। क्योंकि इसका क्षेत्र असीमित है। व्यक्ति के जीवन में सम्बद्ध प्राय: प्रत्येक क्षेत्र में यह सहायता प्रदान की जा सकती है। इसके अतिरिक्त शिक्षा के समान ही निर्देशन की प्रक्रिया भी जीवनपर्यन्त संचालित रहती है जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त तक जहाँ कहीं भी जिस रूप से भी व्यक्ति को सहायता प्राप्त होती है। वह सहायता निर्देशन के अन्तर्गत ही सम्मिलित की जाती है। इस प्रकार की सहायता प्रदान करने वाले व्यक्ति को निर्देशक, प्रदाता अथवा निर्देशन कर्मी के नाम से सम्बोधित कर सकते हैं। विद्यालय के कार्य करने वाले शिक्षक, प्रधानाचार्य, सहकर्मी, परिवार के सदस्य तथा समाज में मित्र सहपाठी, प्रचारक आदि व्यक्ति निर्देशन की प्रक्रिया सुधारात्मक आयाम के स्थान पर विकासात्मक आयाम के रूप में परिभाषित की जाती। आधुनिक शैक्षिक शिक्षा के इस प्रक्रिया के अन्तर्गत निर्देशन की भूमिका का विशेष महत्व है। निर्देशन का उत्तरदायित्व सभी का स्वीकार किया जाता है।

DECEMBER

M	5	12	19	26
T	6	13	20	27
W	7	14	21	28

JA
M
T
W

Scanned with CamScanner